EDITOR'S SCATVIEW

Manoj Kumar Madhavan

India's media and broadcasting industry continues to evolve at a rapid pace, driven by technological innovation, shifting consumer behaviour and emerging digital business models. As connectivity improves and content consumption increasingly moves across multiple platforms, broadcasters, cable operators and streaming services are adapting to a media ecosystem that is becoming more integrated and competitive.

One of the key developments shaping the future of connectivity is the rise of satellite broadband. With advances in low-earth-orbit, medium-earth-orbit and geostationary satellite technologies, new opportunities are emerging to extend high-speed internet services to remote and underserved regions. As explored in our lead technology feature, satellite broadband is expected to complement terrestrial networks and strengthen India's digital infrastructure, helping bridge connectivity gaps across the country.

At the same time, the traditional television distribution landscape is undergoing significant change. OTT platforms, cloud-based television solutions and FAST channels are steadily redefining how content is delivered and monetised. These technologies are creating opportunities for cable operators to evolve beyond conventional distribution models and explore hybrid platforms that combine linear television with streaming services.

Market dynamics within the broadcasting sector are also witnessing notable shifts. Developments such as revised Reference Interconnect Offers are influencing channel pricing structures and impacting the economics of cable television distribution. Meanwhile, the growth of connected television advertising is opening new possibilities for brands while raising important discussions around audience measurement and attribution standards.

Content innovation continues to play a central role in this transformation. The rise of microdrama formats on digital platforms and the growing popularity of creator-led programming demonstrate how broadcasters and OTT platforms are experimenting with new formats to engage younger, digital-first audiences.

Together, these developments highlight an industry that is rapidly adapting to technological change while exploring new opportunities for growth in India's expanding digital media landscape.

(Manoj Kumar Madhavan)

भारत की मीडिया और प्रसारण उद्योग तेजी से बढ़ रही है, जो तकनीकी इनोवेशन, बदलते उपभोक्ता व्यवहार और उभरते डिजिटल बिजनेस मॉडल की वजह से हो रही है। जैसे-जैसे कनेक्टिविटी बेहतर हो रही है और कंटेंट का इस्तेमाल कई प्लेटफॉर्म पर बढ़ रहा है, प्रसारक, केबल ऑपरेटर और स्ट्रीमिंग सेवा एक ऐसे मीडिया इकोसिस्टम को अपना रहे हैं जो ज्यादा एकीकृत और प्रतिस्पर्धी होती जा रही है।

कनेक्टिविटी के विकास को आकार देने वाले ख़ास विकास में से एक सैटेलाइट ब्रॉडबैंड को बढ़ाना है। लो-अर्थ-ऑर्बिट और जियोस्टेशनरी सैटेलाइट टेक्नोलॉजी में तरक्की के साथ, दूरदराज और कम सुविधाओं वाले इलाकों में हाई-स्पीड इंटरनेट सेवा देने के नये मौके सामने आ रहे हैं। जैसाकि हमारे लीड टेक्नोलॉजी फीचर में बताया गया है, सैटेलाइट ब्रॉडबैंड से टेरेस्ट्रियल नेटवर्क को सपोर्ट मिलने और भारत के डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने की उम्मीद है, जिससे देशभर में कनेक्टिविटी की कमी को पूरा करने में मदद मिलेगी।

साथ ही पारंपरिक टेलीविजन वितरण के माहौल में भी बड़े बदलाव हो रहे हैं। ओटीटी प्लेटफॉर्म, क्लाउड बेस्ड टेलीविजन सॉल्यूशन और एफएएसटी चैनल लगातार यह तय कर रहे हैं कि कंटेंट कैसे दिया जाता है और उससे पैसे कैसे कमाये जाते हैं। ये टेक्नोलॉजी केबल ऑपरेटरों के लिए पारंपरिक वितरण मॉडल से आगे बढ़ने और लीनियर टेलीविजन को स्ट्रीमिंग सेवा के साथ जोड़ने वाले हाइब्रिड प्लेटफॉर्म को एक्सप्लोर करने के मौके बना रही हैं।

प्रसारण क्षेत्र में बाजार के डायनामिक्स में भी बदलाव देखने को मिल रहे हैं। रिवाइज्ड रेफरेंस इंटरकनेक्ट ऑफर्स जैसे विकासित चैनल मूल्य संरचना पर असर डाल रहे हैं और केबल टेलीविजन वितरण की इकोनॉमिक्स पर असर डाल रहे हैं। इस बीच कनेक्टेड टेलीविजन विज्ञापन की ग्रोथ बांड्स के लिए नयी संभावनाओं के द्वार खोल रही है, उपभोक्ता मापन और एट्रिब्यूशन स्टैंडर्ड्स के बारे में जरूरी चर्चायें भी बढ़ा रही है।

इस बदलाव में कंटेंट इनोवेशन की अहम भूमिका बनी हुई है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर माइक्रोड्रामा फॉर्मेट को बढ़ाना और क्रिएटर-लेड प्रोग्रामिंग की बढ़ती लोकप्रियता यह दिखाती है कि कैसे प्रसारक और ओटीटी प्लेटफॉर्म युवा, डिजिटल फर्स्ट ऑडियंस को जोड़ने के लिए नये फॉर्मेट के साथ परीक्षण कर रहे हैं।

कुल मिलाकर ये विकास एक ऐसे उद्योग को दिखाते हैं जो तेजी से टेक्नोलॉजी में बदलाव को अपना रही है और भारत के बढ़ते डिजिटल मीडिया माहौल में विकास के नये मौके तलाश रही है।

(Manoj Kumar Madhavan)